साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 06
June 2017

माँ ! अब क्षमा चाहता हूँ

----**आरती**----
पिता - श्री कर्म बीर
माता -श्रीमती सरोज शर्मा
शिक्षा - एम० ए०,(NET)

माँ !
तुम क्यों चली गई ?
मुझे अकेला छोड़
निरीह-नीरस और जड़
जीवन में
जिसका न आदि हैं
और न अन्त
जिसका न आधार हैं
और न विकास

पर, माँ !
मैं अब क्षमा चाहता हूँ

PEN2PRINT®
Edupedia Publications Pvt Ltd

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695

Volume 03 Issue 06

June 2017

कोरे-बेरंग कागज को रंगीन कर
तुम्हारी यादों को
चित्रों में समेटना चाहा
भाग्य की टेढ़ी-मेढ़ी,फीकी और सख्त
लक्कीरों को गहरा करना चाहा

पर, माँ !
मैं अब क्षमा चाहता हूँ
मंद-मस्त बादलों जैसे लहरातें
तुम्हारे धने-काले बालों से
तुम्हारे झुर्रियों भरे चेहरों को सहलाना चाहा
चित्र की उदासी को मिटाना चाहा

पर, माँ !
मैं अब क्षमा चाहता हूँ
समुद्र की लहरों में गोते खाती
तुम्हारी आँखों के कोरों से
बहते आँसुओं को
कई रंगों से सजाना चाहा
चित्र की सख्ती को मिटाना चाहा

पर, माँ !
मैं अब क्षमा चाहता हूँ
तुम्हें यादों से निकाल
चित्रों में समेटना चाहा
^^^^^=^^^^